राधास्वामी संत संदेश

मासिक समाचार पत्रिका

वर्ष : 8 अंक : 102 15 अक्तूबर 2005

सदस्यता शुल्क : ———— वार्षिक : रुपए 40/–
भारत व नेपाल में एक प्रति: रुपए 5/–

इस अंक में

1.	बड़े महाराज संत ताराचन्द जी द्वारा फर्माया सत्संग	2
2.	ध्यानाकर्षण बिन्दू	17
3.	सेवादारों के लिए सूचना	18
4.	हिंसा (महर्षि शिवव्रतलाल जी)	19
5.	अनमोल वचन व ज्ञान सार	21
6.	सत्संग भावांश	22
7.	सतगुरु कृपा	24
8.	शेखी छोड़ और सच्चाई कर (कहानी)	26
9.	ज्ञान पुंज (कहानी)	27
10.	परम सन्त हुजूर ताराचन्द जी महाराज के जन्म दिवस पर विशेष लेख	28

राजीव कुमार लोहिया, मुद्रक एवं प्रकाशक द्वारा अपने स्वामित्व में राधास्वामी सत्संग प्रेस हालू बाजार, भिवानी से मुद्रित तथा कार्यालय, हालू बाजार, भिवानी से प्रकाशित

फोन नं. : 01664-241570 (भिवानी आश्रम)
01664-265094 (दिनोद आश्रम)
वेबसाइट:- www.radhaswamidinod.org
इ-मेल:- info@radhaswamidinod.org

भिवानी : कैसेट क्रमांक : 113

दिनांक : 10 जुलाई, 1993

समय : सायं

राधास्वामी! राधास्वामी दयाल की दया!!
राधास्वामी सहाय!!! राधास्वामी!

प्रेमियो, सत्संगियो, माताओ और बहनों ! सत्संग तो सत्संग ही होता है। यह तो एक वैतरणी नदी है। इससे पापी पार उतर जाते हैं। इन्सान को अपने विचार पवित्र और शुद्ध रखने चाहिए। उसका जीवन ही बन जाता है। जिसके विचार गलत हो जाते हैं उनमें यदि शुद्धता नहीं रहती है तो वह गिर जाता है। आप लोग हर वक्त आते हो और सत्संग सुनते हो, मैं कभी भी ऐसी दावे की बातें नहीं कहता हूं क्योंकि मैं भी इन्सान हूं। संत सतगुरु तो मेरा अपना सतगुरु ही था। मुझे गुरुमुख समझ लो। उनकी ड्यूटी बजा रहा हूं। उन्होंने जो आर्डर दिया उस लाइन पर चल रहा हूं। उनकी ही दया मेहर है। मैं तो कुछ जानता ही नहीं हूं। इसलिए प्रेमी भाइयों के लिये, सभी के लिये यही शिक्षा देता हूं कि अपने घरों में और बाहर कहीं भी हो प्रेम की गंगा बहाओ। प्रेम से ही रहो और प्रेम करना सीखो। प्रेम सब से ऊंची दौलत है। सत्संग की तो बातें ऐसी होती हैं। तुम देखते हो कितनी जगह हैं यहां का जो मिस्त्री है, वह बड़ा तेज है। वह भाई राजीव है। अब देखो पिछले सत्संग में यहां क्या था और इतने ही दिन में कितने कमरे बना दिए हैं। अब सत्संग की बातें चली हुई थीं। गांव में महाराज जी आये हुए थे। बात चली कि कितने सत्संगी हैं? गिने तो गांव के

सात सौ सत्संगी थे। महाराज जी ने कहा–सत्संगी तो एक ही है। वह एक ही चाहे सो कर सकता है। एक राजीव। तुम देखते हो कितना काम करता है कभी कोई भाई यह न सोचना कि क्या हम कुछ भी नहीं करते हैं? नहीं तुम भी करते हो। काम तो सभी करते हैं। ऐसा न हो कि कल चाचा साधुराम जी ही रूष्ट होकर बैठ जाएं कि तेरा तो नाम ही नहीं लिया। ये तो राजीव का ही नाम ले रहे हैं। रतीराम और माधव हर सभी का ऐसा हाल हो सकता है। पर उसकी जो दिलचस्पी है उसे आप अभी तक नहीं समझे हो। ये जो चीजें बन रही हैं, मेरी मेहरबानी से नहीं बन रही हैं। यह राधास्वामी दयाल की मेहरबानी नहीं है और न मेरे गुरु की दया है। सोचो, क्या मैंने ये घटिया बातें कही दी हैं? नहीं। जब आप समझोगे तभी पता लगेगा। ये सब ही राजीव की ही एक आत्मा की पुकार है। सच्ची आत्मा से अगर तुम कोई पुकार करोगे तो उस मालिक को पूरी करनी पड़ेगी। उसकी पुकार यह है कि इतना बन जाए कि बाहर के लोग देखने के लिए आएं कि बड़ा भारी हिसाब से काम हो रहा है। तो यह क्यों नहीं बनेगा?

मेरी तो दो ही पुकार थी सतगुरु के सामने। एक पुकार तो यह थी कि मेरा भण्डारा चलता रहे। दूसरी यह पुकार थी कि संगत प्रसाद (भोजन) लेती रहे। जब भण्डारा चलेगा तो प्रसाद तो संगत लेगी ही। जहां पानी की कमी होती थी, मैं सोचता था कि वहां मैं कुआं बनाता रहूं। यह मेरी पुकार थी। सो इन पर मेरे पैसे नहीं लगते हैं। पैसे तो संगत के ही लगते हैं। ये सब क्या हमने बनाए हैं? नहीं। क्या यह राजीव ने बनाया है? नहीं। उनकी तो यह पुकार थी। पैसे तो संगत के ही हैं। इन कमरों का भी आपको पता है कि ये किस–किस तरह से हैं। जिसका भी हिसाब है पैसे दे दो और इसे अपने पास रखो। इस तरह से उनका पीढ़ियों तक

का कमरा बन जाता है। आप लोगों को पता तो लग ही गया होगा। जैसे ब्यास में भी यही एक हिसाब है। दयाल बाग में भी यही है। सभी जगह पर जहां भी राधास्वामी दयाल की दया है, जिसका भी कमरा हो, उसके बेटे रहो, पोते भी रहो और चाहे वहां उसका परिवार आकर महीने दो महीने ठहरो। कितने ही दिन वहां ठहरो। अगर कोई तकलीफ हो तो प्रसाद लंगर में लो। अगर कोई यह कहे कि हम लंगर में प्रसाद नहीं लेते तो वे अपने आप भी बना कर खा सकते हैं। ऐसा हिसाब है इनका।

मेरी कई बहनों ने ऐसी बातें कही कि हम कमरों के पैसे देना चाहती हैं, मैंने कहा कि सत्संग में दे देना। वहां लिखवा लेना। अपने कमरों को हाथ में रखना। ये तुम्हारे ही कमरे हैं। ये कमरे इसीलिए बने हैं और इस तरफ भी इसी प्रकार से कमरे बन जाएंगे। इसके हिसाब को भी हम बदलेंगे। अगर और जगह मिल गई तो भण्डारा घर के भी कमरे बन जाएंगे। हाथ धोने की जगह अलहदा हो जाएगी। चारों तरफ का यह नक्शा आप लोगों ने देखा नहीं है। मैंने सिरसा में महाराज मस्ताना जी का नक्शा देखा था। मेरे दिल में एक दिन ऐसा विचार आया था कि इसी नक्शे से हमारे यहां भी बन जाए। सो यह आप लोगों का प्रताप है और मेरे सतगुरु की अपार दया है। उसी तरह से बन रहा है। हमारी संगत तो सीधी सादी है। आप देखते हो कि हरियाणा की जितनी भी संगत है सीधी सादी है। इसमें पहले से विश्वास भी बहुत ही ज्यादा आ गया है। पहले तो विश्वास नहीं था। वक्त बताता हूं। मैं बार–बार रतीराम का नाम ले देता हूं क्योंकि यह मेरा पुराना साथी है। मेरे पास एक आदमी गया कि मैं भाई रतीराम से मिलना चाहता हूं। मैंने कहा–नहीं मिलेगा तो अच्छा रहेगा। उसने कहा–क्यों? क्या रतीराम अच्छा आदमी नहीं हैं? उसने मेरे से कहा–आप

उसका सत्संग में नाम लेते हो। मैंने कहा–इसीलिये तो बताता हूं कि तू उससे न मिलना। उसने पूछा–क्या नुक्सान है? मैंने कहा–तू भी डूब जायेगा और वह भी डूब जाएगा। मैं तो सीधी बातें कहने वाला हूं। उसने कहा कि ऐसा क्यों? मैंने कहा–इससे उसको तो यह घमण्ड आ जाएगा कि मेरे दर्शन करने के लिए आने लग गए हैं और उससे मिलने के बाद तेरा मेरे ऊपर विश्वास नहीं रहेगा। क्योंकि वह मेरे से बड़ा महंत है। अच्छा यही है कि तुम दोनों न मिलो। उसने कहा–महाराज जी ! विश्वास तो जहां है, वहीं रहेगा। मैंने पूछा–क्या यह पक्की बात है? उसने कहा–पक्की है। मैंने कहा–फिर तू जाकर मिल ले। यह बात जरूर है उसको चाहे कुछ भी कह लो। उसके मुंह पर कह लो। आगे पीछे कह लो। जैसा यह है वैसा यह है ही। फिर भी मैं इसका नाम क्यों लेता हूं? ये मेरा पुराना साथी है। हम सत्संग में पैदल भी जाया करते थे। साईकल पर भी जाया करते थे। यह साईकिल पर बिठा करके ले जाया करता था। मेरा नेम भी ऐसा ही था। इस विषय पर शाम को सत्संग करूंगा। संगत आ जाएगी। मेरा अपना एक नेम भी था कि सतगुरु ने बात ही ऐसी बताई थी कि किसी का खाना न खाना। कमा कर खाना। कई बातें ऐसी थीं। उस सतगुरु की दया थी।

पहले पैदल जाया करते थे। फिर साईकिल पर गए। फिर गाड़ियों में जाने लगे। फिर जीप ले आए। फिर कार ले आए। आज मैं जीप में बैठकर आया। काफी लोग देख रहे थे कि यह आज जीप क्यों ले आया। इसके पहले तो दो–दो कार बताते थे। ये जीप से क्यों आए? मैं उनको तो क्या बताता? मैं तो सब को ही बताता हूं कि यह बात नहीं है। मैं तो वही जमींदार आदमी हूं। अगर तुम मेरी इस बात को देखोगे तो सारे ही हैरान हो जाओगे कि मैं फसल की कटाई (लामणी) करता हूं। मैं कसोले के साथ

नलाई गुडाई करता हूं। मैं काम करता हूं। देखकर हैरान हो जाओगे सारे के सारे कि ये तो काम भी करता है। मैं काम क्यों न करूं?

मेरे सतगुरु का ही एक नेम था कि बेटा ! जिन्दगी भर कमा कर खाना। पवित्र कमाई तो पवित्र ही होती है। सो ही उस मालिक की अपार दया है।

सतगुरु राजी तो कर्ता राजी।
काल कर्म की लगे न बाजी।।

सतगुरु राजी है तो सारा संसार ही राजी है। सब कोई राजी है। एक महात्मा कहा करते थे। मेरा और उनका बड़ा प्यार था। वे कई मानस जाते तो वे कहते कि फलां आदमी सतलोक में गया। पर थोड़े ही दिन में वे कह देते कि वह तो गिर गया है। मैं कहता कि आपने उसको अभी तो चढ़ाया था और अभी वह गिर भी गया। वे कहते कि हां गिर गया है। मैंने एक दिन अपने महाराज जी से कहा कि क्या बात थी? उन्होंने कहा–पगला ! महाराज कबीर साहब कहते हैं–

संत की चढ़ा नजर और हुआ बज्र।

पर संत की नजर से गिरा तो गिरा। वह गिर ही जाता है। यह कबीर साहब जी की वाणी है। कबीर साहब की किताबें हमने काफी छपवाई भी हैं। भाई राजीव का इस बात की तरफ बड़ा ध्यान है। वह कहते हैं कि कबीर बीजक है। अगर कबीर बीजक छप करके तुम्हारे हाथों में आ गया तो तुम और ग्रंथ को हाथ ही नहीं लगाओगे। कबीर बीजक तो राजा राव ने भी छपवाया है। कबीर पंथी पूर्णदास ने भी छपवाया है। पर इसको वे सब वेदांत में ले गये हैं। पर महर्षि शिवव्रतलाल जी ने जो बीजक बनाया है, उन्होंने तो कमाल ही कर दिया है। वैसे तो यह मैंने चाचा साधुराम

को दे दिया है। मेरे पास इसके तीनों भाग थे और इस बात को देखकर मौका लगा और आप लोगों की अगर पुकार होगी तो बीजक भी छप जाएगा। जैसे 'अदभुत उपासना योग' छपे हैं। वे भी बड़े ही उत्तम हैं। ऐसी बातें महाराज जी कहा करते थे कि ये छः महीने का कोर्स है। नहीं, ये दो महीने का भी नहीं। यह तो सात दिन का कोर्स है। इस बात के लिए मुझे आप घमण्डी न कह देना। अगर तुम सच्चाई से करो तो यह सात ही दिन का कोर्स है। वह 'अद्भुत उपासना योग' बहुत ही अच्छी पुस्तक है। यह उर्दू में थी। पर मैं आप लोगों को बताता हूं।

ये दो भाई हैं। इनमें एक का नाम तो विनोबा जी महाराज है। एक इनका छोटा भाई है पीरे मुंगा। इन चाचा साधुराम का और पीरे मुंगा का मैं अहसान मानता हूं। इनको धन्यवाद देता हूं कि वह 'अदभुत उपासना योग' जो इन्होंने लिखवाया और छपवाया है जो मेहनत की है उसमें इस भाई का नाम तो नहीं लिखा है। वह मेरा सत्संगी भी है और इसने नाम भी ले लिया है। पर मैं उसको अपनी आत्मा से आर्शीवाद देता हूं। उन्होंने बहुत मेहनत की है। मालिक उनको शांति दे। इतनी मेहनत की है कि कोई कर ही नहीं सकता है। इन चाचा साधुराम ने और उस भाई ने की है। पीरे मुंगा ने मेहनत की है। ये दोनों ही किताबें ऐसी हैं कि आप लोग सतगुरु का सत्संग सुन कर इन पुस्तकों को पढ़ लेना और अगर कोई बात अटक भी जाती है तो आकर पूछ लेना। तुम्हारा साधन बड़ा जल्दी बन जाएगा। साधन में तो महर्षि शिवव्रतलाल जी ने कहीं भी रूकावट नहीं छोड़ी है। आप लोगों ने अचंभा माना होगा कि महाराज जी ने तो दो ही महीने कह दिए हैं। सो दो महीने कोई बड़ी चीज तो नहीं है। मैंने तो सात दिन की भी बात कह दी है। मैं कहता हूं कि सात दिन भी नहीं एक दिन भी काफी है। अब तो

सारे ही हैरान होगे। जब सतगुरु पूरा और सच्चा मिल जाता है, शहनशाह मिल जाता है तो एक दिन ही काफी है।

आप लोगों को ज्यादा टाइम नहीं दूंगा मैं। एक ही हवाला देकर समझाऊंगा, अगर तुम समझ सकते हो तो। अगर नहीं समझ सकते हो तो तुम्हारी मर्जी है। इस भ्रम को दूर करने के लिए मेरे पास अनेकानेक इतिहास हैं। पर मैं एक ही इतिहास से आप लोगों को समझा दूंगा। क्योंकि शिवव्रतलाल महाराज जी ने तो लिखा है कि छः महीने का कोर्स है। अगर फिर भी फंसा रहता है तो वह तो कर्मकाण्डी बन जाता है। कर्मकाण्डी का मतलब है, वह वहीं अटक जाता है। टिक जाता है। वह आगे चलने की कोशिश नहीं करता है। पर ये बातें उन्हीं के लिए बताई हैं, जिन्हें अपने घर पहुंचना है। जिसने संसार खाना है और संसार में रहना है, संसार के भोग बिलास करने है, ऐश आराम करने हैं उनके लिए यह बात नहीं कही है। यह भी मैं आप लोगों को बता देता हूं कि जिस तरह से मैंने अब भाई राजीव की बड़ाई की है, अगर वह बड़ाई में आ जाता है तो अच्छा नहीं है। यह तो मेरा एक ख्याल था। वह काम करता है। उसका फर्ज है, वह पिछले जन्म की ड्यूटी लेकर के आया है। कभी कुछ और समझते हो और कभी वह पीरे मुंगा यह समझ ले कि मैंने पुस्तकें लिखी है। उसका तो लिखने का कोई भी अधिकार ही नहीं था। वह तो अपनी ड्यूटी लेकर ही आया था। विनोबा जी कितनी उम्र का है। भागदौड़ में इनाम लेकर आता है। अगर ये अभ्यास और सत्संग इसी तरह कर ले तो काम और फैसला अभी इसी जीवन में ही बन जाएगा। अगर यह ढीला पड़ गया तो फिर नहीं बनेगा। आगे का तो कोई भी एतबार नहीं है। कोई भाई अगर यह कह दे कि मैं तो अगले जन्म में कर लूंगा। यह सुरत या जीवात्मा तो एक कतरा है। जब एक बूंद आसमान से

चलती है वह ऊपर से गिरी हुई बूंद जब नीचे आती है और उसको हवा का झोंका लग जाता है तो वह समुद्र के स्थान की बजाए किसी पहाड़ पर भी तो गिर जाएगी। सो इसी तरह से यह तो हमारा एक कतरा है यह सुरत। दूसरे जन्म पर भरोसा मत करो। अगर तुम अगले जन्म पर भरोसा करोगे तो धोखा खा जाओगे। अगले जन्म पर भरोसा करना बुरी बात तो नहीं है। अच्छा है, क्योंकि–

जहां आसा वहीं बासा।

तुम्हारी अगर आशा ऐसी है तो फिर भी अच्छे हो। मैं क्या कह रहा था? इसी जन्म में काम कर जाओ। पर आप का प्रश्न तो यही था कि क्या दो महीनों में कर सकते हैं? मैं कहता हूं कि सात दिन में भी कर सकते हो। बड़े–बड़े पापी एक दिन में ही तिर जाते हैं।

ज्यादा मिसाल नहीं दूंगा। दो मिसालें दे दूंगा। पहली मिसाल तो तुम्हारे शास्त्रों की है। यह न कहना, तुम्हारे नहीं, भागवत तो हमारी है। यह तो तुम्हारी भी क्या सभी की है। सारी हिन्दू जाति भागवत को मत्था झुकाती है। यह तो सभी की है। यह हमारा सच्चा ग्रंथ है। उसी का एक हवाला देता हूं। राजा परीक्षित की सात दिनों में मुक्ति हो गई। क्या राजा परीक्षित की सात दिन में मुक्ति हुई नहीं हुई? भागवत–पाठी कहते हैं कि उनकी सात दिन में ही मुक्ति हो गई। आप लोग भी हां भर लोगे। इसी प्रकार से तुम्हारी भी सात दिन में मुक्ति हो सकती है। पर यह बताओ कि क्या तुम्हारे अंदर से किसी ने सतगुरु के पास जाकर प्रार्थना और विनती की कि मेरा अभ्यास करवाओ। मैं विनती करता हूं कि मेरा अभ्यास नहीं बनता है। आप लोगों को तो शर्म आती है। आप सोचते हो कि अगर ऐसा कह दिया तो सभी यह कहेंगे कि क्या

तेरा अभी तक भी अभ्यास नहीं हुआ है? पर बात यह है कि राधास्वामी के दर्शन कब होते हैं?

दूध छठी का निकसे भाई। तब राधास्वामी के दर्शन पाई।।

छठी का दूध निकल आता है। आप पूछोगे कि क्या राजा परीक्षित का भी छठी का दूध निकल आया था? हां उनका भी छठी का दूध निकल आया था। उसने जो सात दिन का प्रण किया उस प्रण को आप लोग भी कर लो। फिर तो सात दिन में मुक्ति हो जाएगी। उन्होंने सात दिन में ही बड़ा त्याग कर दिया। उनके मन में यह आया कि अगर कुछ है तो परमात्मा की भक्ति ही है। संसार तो झूठा और नाशवान है। उसके गुरु ने भी यही शिक्षा दी। उसने कहा–तू इस मोह, ममता को छोड़ दे। इसीलिये मैं कमरों की बातें कह रहा था कि आप लोग मोह ममता को छोड़ कर भजन करना सीखो। यहां खाना भी मिलता है। यहां जो आता है उसको कपड़ा भी मिलता है। उनको भोजन, कपड़ा कौन देता है? सो तो आप लोग ही देते हो।

मैं तो तुम्हारी मोगरी तुम्हें ही मारता हूं। किसी दूसरे को नहीं मारता हूं। तुम्हारी मोगरी और तुम्हारा ही मूंड। यह मत सोचो कि हम यहां क्यों खाएंगे, यह तो धर्मादा है। यह धर्मादा नहीं है। न यह धर्मादा है और न यहां हराम का है। यहां तो हलाल की कमाई है। इतनी हलाल की है कि यह बताने में देर लग जाएगी।

पहले मैं राजा परीक्षित की बातें बता देता हूं। राजा परीक्षित की सात दिन में ही मुक्ति हुई। पर तुम राजा परीक्षित जैसे बन कर दिखाओ। ऐसे त्याग करो अपने मन से कि सात दिनों में उसने सप्ताह क्या सुनी, वह तो सात दिन में सतखण्ड में पहुंच गया था। सतखण्ड में उसको किसने पहुंचाया? उस वक्त के सभी ऋषि–मुनियों में दो ही सिद्ध माने जाते थे। त्रेता युग में तो सब

से बड़े वशिष्ठ जी थे। वे इसीलिए सबसे बड़े थे क्योंकि उनमें शांति थी, प्रेम था। जहां ये हैं वहां सब कुछ है। कष्ण जी के समय में राजा परीक्षित बाद में हुए। उन में भी शांति थी। सारी ही बातें थी। जब वह सातवें दिन का समय आया तो उस वक्त तक इतना त्याग किया कि पांच मिनट के त्याग में भी मोक्ष हो जाती है। सात दिन त्याग करके कथा सुनी। यह कथा शुकदेव जी ने सुनाई थी। सुनने वाले राजा परीक्षित थे। अब आप पूछ सकते हो कि सात दिन में मुक्ति और भी सुन रहे थे, उनकी तो नहीं हुई। उनके साथ तो अनेक ऋषि भी बैठे हुए थे। सारे ही चक्कर काटते रह गए। राजा परीक्षित की ही मुक्ति क्यों हुई? इसका कारण था कि राजा परीक्षित आत्मा से ही त्यागी बन गये थे। हम तो बेटे पोते, धी–जंवाई और परिवार में और राजनीति में दूसरों की बुराइयों में लगे रहेंगे तब तक हम कभी भी भक्ति नहीं कर सकते हैं। संत हो तो सहन करना सीखो। कहते हैं–

यही मता संत का, रहना एकांत का।

मैं आपको सहन की बातें बताऊंगा तो तुम्हारी आंखों में आंसू आ जाएंगे। यह तो फिर ही बताऊंगा। अब तो यही बताता हूं कि राजा परीक्षित त्यागी थे। सहनशील भी थे। शुकदेव जैसे कुलगुरु भी नहीं मिलते हैं। अब सात ही दिन में, उनका उद्धार कर दिया और किसी भी ऋषि का तो भागवत में ऐसा इतिहास नहीं आता है। यहां भागवत पढ़ने वाला या सुनने वाला भी होगा। किसी का भी इतिहास नहीं है। देखा नहीं किसी का भी नहीं हुआ। अगर हम स्वामी जी महाराज की किताबें पढ़ लें तो उद्धार नहीं होगा। मेरी पुस्तकें पढ़ने से उद्धार नहीं होगा। उनके उसूलों पर चलोगे तो उद्धार हो जाएगा और जीवन सफल हो जाएगा। राजा परीक्षित ने त्याग किया और उनके उसूलों पर चलकर क्या किया? सात दिन

में शुकदेव जी ने उनको सात मंजिलों पर पहुंचाया था। सो ही सतगुरु की जरूरत पड़ती है। स्वामी जी भी कहते हैं–

सतगुरु खोजो हे प्यारी, जग में दुर्लभ रत्न यही।

अर्थात् सतगुरु की खोज करो। यही रत्न जग में दुर्लभ है। सात दिन में उन्होंने सात मंजिलें तय करवा दी। अब छः मंजिलें हैं पिंड की। छः मंजिलें ब्रह्मांड की हैं। छः मंजिलें हैं पारब्रह्म की। कुल अठारह मंजिलें हैं। जो सत्संगी हैं उन्हें पता है। पिंड की जो छः मंजिलें हैं उनको छोड़ कर बल्कि अंतर की मंजिले लेकर के शुकदेव जी उनको आगे ले गए। उन्होंने सप्ताह कहां पूरी की? वे उन्हें कहां ले गए? उन्होंने सप्ताह को सतखण्ड में जाकर पूरा किया। सतखण्ड में पहुंचने के बाद वापिस नहीं आता है। वह चला जाता है। कहां? बूंद उस समुद्र में समा जाती है। जो बूंद समुद्र का रूप बन जाती है वह कभी भी नहीं आती है। हम वहां जाकर उस सतपुरुष का रूप बन जाते हैं। कैसे? वहां पर शब्द की गूंज है। वह गूंज उस शब्द में समा जाती है। दस प्रकार के शब्द हैं। नौ प्रकार के शब्दों को छोड़कर वह गूंज दसवें प्रकार के शब्द में चली जाती है। फिर वह हथियाती नहीं है। वह सतखण्ड में चली जाती है। अब भी साइंस वाले आकाश की वाणी को तो पकड़ते हैं पर सतलोक की वाणी को नहीं पकड़ सकते हैं। यहां ब्रह्मांड की वाणी को तो पकड़ लेते हैं पर सतखण्ड की वाणी को कौन पकड़ सकता है? सतखण्ड की वाणी, जैसे सारे ही शास्त्र वेद, पुराण, संस्कत से बने हैं, इस संस्कत को किसने बनाया? यह तो संतों ने ऋषियों ने ही बनाई है। उन्होंने संस्कत कहां बनाई? वे अंतर का साधन करते गए। अंतर के तजुर्बे से ही संस्कत और साइंस बना ली। यह सब ही हमारे ऋषियों का खेल था। हमारे संतों की दया थी। अब तो संत रहे न ऋषि रहे। अब तो हम उनकी कद्र भी नहीं जानते

हैं। अब आप ही बताओ कि सात दिन में राजा परीक्षित की मुक्ति हुई या नहीं? जैसे मैंने बताया है। अगर नहीं हुई तो फिर तुम क्यों फंसे मरते हो और क्यों यह सप्ताह बचवाते हो? सात दिन के सप्ताह से पित्तरों की मुक्ति हो जाएगी। यह सप्ताह थी। हमारे एक ही दष्टांत में मुक्ति हो सकती है। कोई सत्संग था। भाई रतीराम ने कहा–ज्ञान का और घाम (धूप) का तो चमका ही लगता है।

यह बात सच है। अगर तुम्हें सचमुच ज्ञान का चमका लग जाए तो एक ही दिन में मुक्ति हो सकती है। होशियारपुर में बड़ी संगत आई हुई थी। महाराज फकीरचन्द जी ने कहा कि यह अपना–अपना तजुर्बा होता है। उन्होंने कहा–मैंने इतने वर्ष तक अभ्यास किया तब निर्वाण पद पर पहुंचा। उस निर्वाण पद से क्या मिला? यह निर्वाण पद तो जैनियों का अंतिम स्थान है। सिक्खों का अंतिम स्थान अमतसर का तालाब है। सनातनियों का वह मानसरोवर है। हम लोग उसी स्थान को सुन्न कहते हैं। काफी लोग उसको दसवां द्वार भी कहते हैं। ऐसा खोलकर बताने वाला नहीं मिलेगा। मैं फिर भी आप लोगों के भले के लिए आया हूं। मैंने तो इसके लिए बेहद दुख उठाए पर तुम्हारे लिये तो सीधी–सादी बातें बताता हूं। आप कहोगे–क्या और भी जल्दी हो सकती है? हां, मुक्ति एक दिन में भी मिल सकती है। ज्ञान का चमका लगता है। सच्चाई होनी चाहिए। नेम पर चलो। आप सभी एक नियम बनाओ। एक ही नियम बना लो कि दोनों वक्त ध्यान में जरूर बैठना है। तिर जाओगे। नेम के कारण तो एक कसाई तिर गया था।

तुमने सदन कसाई के बारे में सुना होगा। उसका एक ही नेम था और वह एक ही दिन में तिर गया। एक दिन में ही उसको दर्शन हुए। उसका संशय दूर हो गया और वह तिर गया। वेश्या भांडली तिर गई। सदन कसाई बकरे मारता था। तुमने भी सुना

होगा। मैंने उसकी कथा सुनी है। भागवत में भी शायद आती है यह कथा। वह बकरे मारता था। पर सदन कसाई का यह नेम था कि रात को पशु नहीं मारेगा। वह बासी मांस भी नहीं रखता था। कहते हैं कि राजा का यह नियम था कि अगर एक आदमी आ जाता था तो पाव भर मांस कसाइयों के जिम्मे होता था। अगर उसके पास चार आदमी आ जाते थे तो एक किसी को भेज देता कि चार आदमियों के लिए एक किलो मांस ले आओ। एक आदमी आता है तो पाव भर ले आओ। बारी बांध रखी थी। अब उस रात सदन कसाई की बारी थी। तुम, यदि मर्यादा और नियम बांध कर चलो तो मैं तुम्हें बताता हूं। राजा ने कह दिया कि जाओ ! आज तो सदन कसाई की बारी है। वे सदन कसाई के पास मांस लाने के लिए गए। उन्होंने कहा–राजा का एक मेहमान आया है और वहां पाव भर मांस मंगवाया है। सदन कसाई ने कहा–आपको तो पता नहीं है। मैं बासी मांस नहीं रखता हूं। रात को मैं पशु को नहीं मारता हूं। यह तो जुल्म ही हो गया है।

सदन ने सोचा कि क्या करूं? मांस अगर नहीं दिया तो राजा मार देगा। मैं ये तुम्हारे ग्रथों की बातें कहता हूं। तुमने भी सुनी होगी। अब उसने सोच लिया कि मांस तो देना ही पड़ेगा। उसने सुबह काटने के लिए बकरे को बांध रखा था। उसने विचार कर लिया कि ऐसा करने से तेरा प्रण रह जाएगा। मांस भी पहुंच जाएगा और रात को जीव भी नहीं मरेगा। वह छुरी लेकर बकरे की तरफ चल पड़ा। उसने सोचा कि इसके नलों की दोनों गोलियां निकाल कर दे देता हूं। यह पाव भर की हो जाएंगी। मेरा काम पूरा हो जाएगा। राजा भी बुरा नहीं मानेगा। ऐसा करने से बकरा मरेगा नहीं। सुबह ही इसकी गर्दन काट देना। वह जब उसको काटने गया तो बकरा हंस पड़ा। जिसका दिन अच्छा आ

जाता है तो वक्ष भी हंस पड़ते हैं। बकरे ने कहा–सदन ! तेरी मेरी सिर धड़ की बाजी लगी हुई हैं। यह दूसरा बैर मत कर। इससे तो फिर जन्म लेना पड़ जाएगा। यह जुल्म मत कर। कहते हैं कि सदन ने छुरी फेंक दी और राम की भक्ति में लग गया। सो ही उसको राम के दर्शन हो गए। उसको सच्ची विरह और लग्न हो गई। उसका कसाईपना चला गया। जब तुम्हें विरह और लग्न होगी तो उस वक्त तुम भी सब कुछ भूल जाओगे। नियम के बंधन भी टूट जाते हैं। यह तो चाहे एक दिन में कर लो या दो दिन में कर लो। बड़े–बड़े पापियों का उद्धार हो जाता हैं।

सो मैंने तो आप लोगों को यही कहा है कि अगर तुम सच्चाई से लगो, यह कोई ज्यादा दिन का कोर्स नहीं है। 'अद्भुत–उपासना योग' दोनों भाग पढ़ने योग्य हैं। पर पढ़ना भी उन्हीं के लिए है जो रोज अभ्यास करते हैं। गैर अभ्यासी के लिए शिवव्रतलाल जी की किताबें काम की नहीं हैं।

सो मैंने आपको थोड़ी बातें बताई कि नेम से काम करोगे तो नेम तुम्हारी मदद करना शुरू कर देगा। अगर नेम से काम नहीं करोगे तो मदद शुरू नहीं होगी। तुम सब के सब ही गिर जाओगे। नाम लेने के लिए तो सब आ जाते हैं। पर काम करने के लिए तैयार नहीं होते हैं। संत सतगुरु के दरबार में जाओ। वहां तीन काम होते हैं, अगर तुम अपना उद्धार चाहते हो तो। ये तीन काम कौनसे हैं? एक तो तन की भक्ति होती है। एक मन की भक्ति होती है। एक धन की भक्ति होती है। ये तीनों भक्ति तो हर कोई कर सकता है। पर एक सुरत की भक्ति होती है। सुरत की भक्ति तो कोई लाखों में एक करता है। वही एक सुरत की भक्ति करने वाला करोड़ों का उद्धार कर देता है। आपने सुना है–

गुरुमुख की गति है बड़ी भारी।
गुरुमुख कोटिन जीव उभारी।।

एक गुरुमुख करोड़ों जीवों का उद्धार कर देता है। सो हमारा तो उद्धार होना ही होना है। क्योंकि मेरे गुरु महाराज भी गुरुमुख थे और शिवव्रतलाल जी भी गुरुमुख थे। हजूर महाराज का तो कहना ही क्या है? सो हम सब करोड़ों में तो आ ही जाएंगे। स्वामी जी का भी क्या कहना है। यह भी मैं संतों की साख देता हूं कि जिस लाइन में एक परम संत हो गया, सात पीढ़ी तक वह परम संत संभालता रहेगा। क्या समझे? सात पीढ़ियों तक तो उद्धार होगा। राधास्वामी दयाल आए, सात पीढ़ी तक तो वही उद्धार कर सकते हैं। यह परमसंत का लेख है। अगर हजूर महाराज जी भी कुछ न हों शिवव्रतलाल भी कुछ नहीं है। अरमान साहब भी कुछ नहीं और मैं भी कुछ नहीं हूं तो भी ये तो कुल चार पीढ़ी ही हुई हैं। वे दो पीढ़ियों तक तो और भी उद्धार करेंगे। पर यह बात तो है ही नहीं। हजूर महाराज तो कुल मालिक ही थे। वे तो उनकी धार ही थे। महर्षि जी का तो कहना ही क्या है? उनका तो कोई मुकाबला ही नहीं है। मेरे दाता अरमान साहब तो खुद ही खुदा थे। उनकी ही दया के सहारे से तो हम जिंदा हैं। उन्हीं के प्रताप से तो हम बचे हुए हैं। सतगुरु की तो दो ही निशानी पकड़ लेनी चाहिए। नशे और विषयों से दूर होना चाहिए। पवित्र कमाई करके खाने वाला हो। उस सतगुरु से तो हमारा बड़ा भला ही भला है। ऐसा सतगुरु मिल जाए तो हमारा बड़ा भाग है और हमारा जीवन सफल हो सकता है। मेरे दाता तो ऐसे ही थे।

सो ही मैं उनकी शरण में गया और उनके प्रताप से आप लोगों का भी भला हो जाएगा। सो मैं तो कुछ भी नहीं हूं। मैं तो उनकी ड्यूटी बजाता हूं। मैं तो कुछ जानता भी नहीं हूं। मैं तो एक ही बात जानता हूं कि हे दाता ! मैं तेरी शरण में हूं बस। मालिक! तेरी शरण में हूं। जो मालिक की शरण में चला जाता है तो

मालिक कभी उसके साथ में धोखा नहीं होने देता है। उसके साथ व्यर्थ की जो बातें करता है मालिक उसका नाश भी कर देता है। आप स्वयं मत बोलो। आप तो शांति रखो। फिर देखो सतगुरु क्या करता है? मीरा की मदद की। फिर मैं कितनों की बातें बताऊं? बड़े बड़ों की मदद की और करता रहा है। क्या हमारी नहीं करेगा? जब कि वह सब की करता है। मेरी तो यही विनती है कि मेरी संगत काल के मुंह में न जाए। सभी का उद्धार हो। जो पहले चार सतगुरु आए हैं, उनके प्रताप से सभी का उद्धार हो जाए। मैं भी उनकी ड्यूटी बजा रहा हूं। सो उनकी दया से मेरा वचन खाली नहीं होना चाहिए।

।। राधास्वामी ।।

ध्यानाकर्षण बिन्दू

सभी सत्संगियों को स्मरण कराया जाता है कि प्रत्येक आश्रम से सत्संगियों की दिनोद धाम में सेवा की बारी आती है। अतः आप सभी अपनी-2 शाखा में जाकर अपनी सेवा का समय पूछें और निश्चित समय पर धाम में सेवा तथा दर्शन लाभ उठायें।

अक्तूबर/नवम्बर मास के लिए सेवा कार्यक्रम

1	इस्माइलपुर	17 अक्तूबर	-	23 अक्तूबर
2	कोसली	24 अक्तूबर	-	30 अक्तूबर
3	लालपुर	31 अक्तुबर	-	06 नवम्बर
4	चौबारा	07 नवम्बर	-	13 नवम्बर
5	थिरपाली	14 नवम्बर	-	20 नवम्बर
6	गाधली	21 नवम्बर	-	27 नवम्बर

सेवादारों के लिए विशेष सूचना

सभी सत्संगियों तथा विशेष रूप से सभी सेवादारों को ''राधास्वामी संत संदेश'' पत्रिका के माध्यम से सूचित किया जाता है कि हजूर महाराज की दया मेहर से भिवानी शाखा का अगला वार्षिक सत्संग **दिनांक 13 – 11 – 2005** रविवार को होना निश्चित किया गया है। अतः सभी सेवा करने के इच्छुक सत्संगी व सेवादार दिनांक **12 – 11 – 2005** को प्रातः **10** बजे भिवानी आश्रम में निश्चित समय पर अवश्य पहुंच जायें।

अतः तदनुसार हमारे सभी **''राधास्वामी संत संदेश''** के सदस्यों से भी प्रार्थना की जाती है कि यह सूचना अपने अधिकतम सत्संगियों व विशेष रूप से सेवादारों तक जिस प्रकार भी संभव हो विशेष रुचि लेकर शीघ्रातिशीघ्र पहुंचाने का कष्ट करें क्योंकि सत्संग बहुत ही निकट है। इसे अति आवश्यक समझें।

।। राधास्वामी।।

सफाई के सेवादारों के लिए विशेष सूचना

सफाई के सभी सेवादारों से अनुरोध है कि वे 11 – 11 – 2005 को प्रातः भिवानी आश्रम में जरूर पहुंच जाए।

आगामी मास के सत्संग कार्यक्रम

3 नवम्बर	गुरुवार	सोनीपत
13 नवम्बर	रविवार (वार्षिक)	भिवानी

हिंसा

महर्षि शिवव्रत लाल जी

कहने वालों ने कहा है कि ''अहिंसा परमो धर्म:''। यदि अहिंसा परमधर्म है तो हिंसा परम पाप और परम अधर्म है। संसार में जिधर दृष्टि जाती है चारों ओर हिंसा हो रही है। मन जिभ्या रूपी तलवार बना हुआ है। धोखा, फरेब, ईर्ष्या, द्वेष और अत्याचार का बाजार गर्म है।

जिस समय लोगों में पशुओं का मांस खाने का रिवाज था उस समय मांस खाने को हिंसा का नाम दिया जाता था और निकृष्ट खाने से मनुष्य को बचने के लिये धर्म की शिक्षा दी जाती थी। अब यदि देखा जाये तो आजकल का मनुष्य मांस खाने में सबसे ऊपर चला गया है। मुर्गी, अण्डा, बतख, मछली, झंगा, गधा, गाय, बकरी वह सब कुछ खाने लग गया है।

इस मानव भक्षण को तुम क्या कहोगे। धार्मिक मनुष्य अफ्रीका के हब्सियों को मानव भक्षक का नाम देते थे और अपनी सभ्यता पर आप गर्व करते थे मगर यह कोई नहीं देखता कि स्वयं आजकल का मानव, मानव की हड्डियां, पसलियां और आतों को भी चट कर रहा है। एक तरह से नहीं हजारों लाखों तरीकों से इसको खा रहा है। क्या यह हिंसा नहीं है?

मन वचन कर्म से किसी का दिल दुखाना भी बड़ी भारी हिंसा है। यदि सच पूछा जाये तो दिल दुखाने की हिंसा मांस खाने की हिंसा से बुरी और भयंकर है। कोई किसी को मार कर एक ही बार इसका काम तमाम कर देता है मगर चित्त में जो अत्याचार का कांटा गढ़ जाता है वह जीवन भर खटकता रहता है।

मगर देखो ! इस सभ्यता में विद्या बुद्धि की उन्नति के आघात

हिंसा के लिये पुस्तकें लिखी जाती है। भाषण दिये जाते हैं। कौन आदमी है जो हिंसा के इन हमलों से बचा है। किसी का धार्मिक अपमान किया जाता है। जिस धर्म को संसार में सुख शान्ति का कारण होना चाहिये वही अशान्ति और बैचनी का कारण बना हुआ है। तुम अपने आस-पास के हालात को देखो और तुमको इसमें सच्चाई ज्ञात होगी। एक कहता है मेरा धर्म ठीक है दूसरे का गलत है और लड़ाई व हिंसा के लिये तत्पर होता है। दूसरा कहता है कि मेरा खुदा सच्चा है और तेरा खुदा झूठा है इस खुदा के नाम पर तलवारें म्यान से निकल पड़ती हैं। इस खुदा और उस खुदा के नाम पर लड़ाई करने को आ जाते हैं। फिर सभ्यता के नाम पर किसी के रहन सहन पर नोंक-झोंक, मैं अच्छा तू बुरा, इसी तरह एक नहीं संसार में हजारों ही प्रकार की हिसायें हैं मगर हम इन सबको छोड़ते हुये केवल इस हिंसा की ओर तुम्हारा ध्यान दिलाना चाहते हैं जिससे बचने की शिक्षा सब सम्प्रदाय और विशेष कर बुद्ध और जैनियों व आर्य धर्म ने और संतमत ने दी है। वह यह है कि रूहानियत प्रिय लोगों को पशुओं के मांस खाने से बचना चाहिये। ■

जीवन दर्शन

अच्छे काम करने की अपेक्षा अच्छे मनुष्यों की संगत अधिक अच्छी है। इसी प्रकार बुरे आदमियों का संग बुरे कामों की अपेक्षा अधिक बुरा है।

भूख ऐसा बादल है जिससे सिवा दया की वर्षा होने के और कुछ नहीं बरसता।

यदि तुम पर कोई अहसान करे तो पहले मालिक का शुक्रिया अदा करो और फिर उस अहसान करने वाले का, क्योंकि मालिक ने ही उसके दिल को तुम पर मेहरबान किया है। -मौलाना रूम

अनमोल वचन

- चाहे जीव का वध बलि के रूप में हो या आहार के लिये। जो कठोर हृदय और निर्दयी लोग मूक प्राणियों के वध का उपदेश देते हैं उन्हें धर्मराज के न्यायालय में कष्ट भोगना पड़ेगा।
  —संत कबीर साहिब
- जो संसार के सब जीवों में एक परमात्मा देखता है, जिसने अहंकार को हर तरह से नष्ट कर दिया है, वही शुद्ध सन्त-साधु है। बाकी सब माया से बंधें हुए हैं। *—संत नामदेव जी*
- जिन घरों में प्यार और शान्ति है, वहां सत्संग और गुरुओं की बातें चलती हैं। उन घरों में भजन नहीं होता है तो भी बिना भजन किए भजन बन जाता है। *—संत कंवर जी महाराज*
- मनुष्य को अपना अनमोल जीवन दुनिया के कामों में ही बर्बाद नहीं कर देना चाहिये। *—संत तुलसी साहिब*

ज्ञान-सार

- यदि तुमने आसक्ति के राक्षस को नष्ट कर दिया है तो इच्छित वस्तुएं तुम्हारी पूजा करने लगेंगी। आसक्ति ही मनुष्य को नीच और दुर्बल बनाती है।
- हमारे समस्त दुखों का प्रमुख कारण यह है कि हम स्वयं अपने प्रति ही सच्चे न रहकर दूसरों को खुश करते रहते हैं।
- चिन्ताएं, परेशानियां, दुख और तकलीफें परिस्थियों से लड़ने से दूर नहीं हो सकती है, वे दूर होंगी अपनी भीतरी दुर्बलता दूर करने से। जिसके कारण ही वे पैदा हुई हैं।
- जिस समय सब लोग तुम्हारी प्रशंसा करेंगे, वह समय तुम्हारे रोने का होगा।

सत्संग भावांश दादरी 19.8.2005 भाग-2

जीव अपने कर्मों व अन्य विभिन्न प्रकार के बन्धनों के भ्रमों में फंसकर लख चौरासी का चक्कर काटता है। वह मनुष्य योनि में सतगुरु के द्वारे से होकर ही भव सागर के बन्धन से मुक्त हो सकता है। कुल मालिक जीवों को भव सागर के बन्धन से मुक्त करवाने के लिए ही सन्तों को भेजते हैं। ऐसा कुल मालिक का विधान है। स्वामी जी महाराज कहते हैं कि-

पहला बन्धन पड़ा देह का, दूजा तिरिया जान।
तीजा बन्धन पुत्र विचारो, चौथा नाती मान।।
नाती के फिर नाती कहिएं, फिर कहो रहा कौन ठिकान।।

हमने अपने इन बहुत से बन्धनों को अपने ही भ्रम से बहुत भयानक भी बना लिया है। मृत्यु का एक ऐसा ही बन्धन है, जिसको लोगों ने अपने भ्रम से इसे बहुत डरावनी बना लिया है। परन्तु मृत्यु की वास्तविकता को समझने के लिए सन्त जीवित मृत्यु प्राप्त करने की शिक्षा देते हैं। हमारे सब भ्रम ऐसे ही हमारे अपने ही बनाए हुए हैं, जैसे मनुष्य रात के समय में रस्सी को सांप समझ लेता है और आक को भूत बना लेता है। मनुष्य आक को भूत समझकर तेज चलता या दौड़ता है तो वह आक भी उसके पीछे तेजी से आता या दौड़ता हुआ आता दिखाई देता है। दिन निकलने पर जब वह उस आक को देखता है तब वह समझता है कि यह तो उसका भ्रम ही था।

कई सत्संगी सोचते हैं कि मैं अपने अमुक काम करने के बाद में सब कुछ छोड़कर भक्ति करूंगा। परन्तु ऐसे लोग कभी कुछ नहीं कर

पाते हैं। यह उनका भ्रम होता है। सन्तमत यह शिक्षा नहीं देता है कि तुम अपना घर या काम छोड़ दो। वे तो बुरे कर्म छोड़ने के लिए कहते हैं। वे यह भी कहते हैं कि मनुष्य का यह भी भ्रम ही होता है कि संसार में किसी चीज ने उसको पकड़ रखा है। असलीयत तो यह है कि मनुष्य ने स्वयं ने ही संसारी चीजों को पकड़ा हुआ है। जैसे एक बहुत तंग गले का बर्तन है, उसमें हाथ तो जा सकता है पर मुट्ठी नहीं जा सकती है। उस बर्तन में भूगड़े पड़े हैं। एक बन्दर आकर उसमें हाथ डालकर उन भूगड़ों को अपनी मुट्ठी में ले लेता है। अब उसकी मुट्ठी बर्तन का मुंह तंग होने के कारण बाहर नहीं निकल सकती है। वह भूगड़े अपनी मुट्ठी में से छोड़ता नहीं है। इसलिए उसका हाथ छूटता नहीं है। वह समझता है कि उसको उस बर्तन ने पकड़ लिया है। वह चिल्लाता है। वह इस बात को समझता नहीं है यदि कोई उसको समझाने का प्रयत्न करे तो वह उसकी भाषा नहीं समझता है। इसीलिए वह पकड़ा जाता है।

मनुष्य के भ्रमों को समझाने के लिए तो कुल मालिक सन्तों को भेजता है। सन्त लोगों की आम भाषा बोलकर उनको समझा कर भव सागर से पार ले जाते हैं। जीव के जन्म-मरण से छूटने का केवल मात्र यही एक मार्ग है। यदि कोई अपने बल या बुद्धि से छुटकारा पाना चाहे या किसी अन्य मनुष्य से समझकर मोक्ष प्राप्त करना चाहे तो ऐसा कभी भी नहीं हो सकता है क्योंकि संसार में सभी अपने-2 बन्धनों से बन्धे हुए हैं। इन बन्धनों से छुटकारा तो कोई निर्बन्ध सन्त ही करवा सकता है। बन्धनों से बंधे हुए मनुष्य अन्धों के समान होते हैं। सो अन्धा अन्धे को रास्ता नहीं दिखा सकता है। सन्त कहते हैं कि-

इधर से अन्धा आइया, उधर को अन्धा जाय।
अन्धे की बांह अन्धा पकड़े तो मार्ग कौन बताय।।

■

''मैं कृष्णपाल सिंह मूलतः गांव बुढसैनी, जिला बागपत, उत्तर प्रदेश का निवासी हूं, अब बुराड़ी गांव दिल्ली में रह रहा हूं। मेरी शादी 25-4-1994 को हुई थी, दस वर्ष बाद तक भी मेरे यहां कोई सन्तान नहीं थी। इस बीच हमने काफी इलाज कराया, कई वर्ष पहले हमने थक हार कर सभी इलाज बन्द करा दिये थे। मैंने 5 जुलाई 2001 को गुरु पूर्णिमा के दिन राधास्वामी आश्रम भिवानी में महाराज जी से नामदान लिया। मेरे छोटे भाई के यहां 13-10-2002 को एक पुत्र ने जन्म लिया। मुझे बहुत खुशी हुई, लेकिन इस बच्चे ने पैदा होने के 36 घंटे बाद तक भी पेशाब नहीं किया। मैंने डॉक्टर से बात की व बच्चे की जांच करने को कहा। लेकिन डॉक्टर ने सब कुछ सामान्य बताया। तभी एक बूढ़ी मां ने, जो वहीं बैठी थी हमसे कहा कि तुम्हारे यहां किसी देवी-देवता की पूजा होती हो, उसके नाम का रुपया उठा कर रख दो। तभी मुझे महाराज जी का ध्यान आया, मैंने मन ही मन महाराज जी से विनती की कि महाराज जी कल दशहरे का सत्संग जो नजफगढ़ में है मैं उसमें नहीं आ पाऊंगा, इसीलिये यदि मुझे सत्संग में बुलाना चाहते हो तो बच्चे को ठीक कर दो। तभी पांच मिनट में ही वह चमत्कार हुआ और बच्चे ने अस्पताल का बिस्तर गीला कर दिया। तभी हम जच्चा बच्चा को छुट्टी दिलवा कर घर ले आये। इसके बाद मेरे कुछ शुभ चिन्तकों ने मुझसे कहा कि महाराज जी सेब का प्रसाद बनाकर देते हैं आप भी अपनी पत्नी को साथ लेकर किसी दिन दिनोद आश्रम में महाराज जी से प्रसाद बनवा कर खिलाओ, तो आपके यहां भी मालिक मौज करेगा। लेकिन मैंने ऐसा नहीं किया, क्योंकि मुझे मालूम था कि मेरे महाराज जी अन्तर्यामी हैं,

उन्हें तो सभी का ख्याल है। मेरी जीजी व जीजा भी मेरी ओर से बहुत ही चिन्तित थे। उन्होंने भी मेरी पत्नी को मेरठ ले जाकर इलाज शुरू कराया, मगर दो तीन महीने बाद भी कोई बात नहीं बनी। फिर उन्होंने दूसरी डॉक्टर से इलाज शुरू कराया, उस डॉक्टर ने सभी वही टैस्ट जो हम कई वर्ष पहले करवा चुके थे, दोबारा कराने के लिए लिख दिये। तभी मैंने कहा कि पहले मैं एक बार महाराज जी के दर्शन करके आऊंगा। उसके बाद जैसा तुम कहोगे मैं करूंगा। मैं 29-3-2004 को महाराज जी के दर्शन व सत्संग सुनने के लिए भिवानी आश्रम गया और सत्संग सुनते-2 ही मैंने महाराज जी से प्रार्थना की कि महाराज जी अब तो आपको कुछ करना ही पड़ेगा, नहीं तो काफी परेशानी हो जाएगी। और मेरे मालिक ने मेरी इसी प्रार्थना को सुन लिया व उसी माह मेरी पत्नी को गर्भ धारण हो गया। मेरी पत्नी शुगर की मरीज थी व रोजाना 500 एम.जी. की मैट फार्मिन गोली दिन में तीन बार खाती थी व और भी शारीरिक परेशानी थी, लेकिन महाराज जी ने ऐसा करिश्मा किया जैसे परमात्मा खुद मेरे घर खुशियां लेकर आ गया हो। 29-10-2004 को बड़े ऑपरेशन से मेरी पत्नी को बेटी पैदा हुई। कुछ परेशानियां जरूर आई मगर महाराज जी ने एक-2 करके सबको हल कर दिया। अब हम पत्नी व बेटी ठीक-ठाक हैं व महाराज जी से आशा व प्रार्थना करते हैं कि जैसी दया मुझ पर की है ऐसी सब पर करें। राधास्वामी ।''

-कृष्णपाल सिंह,
विजय कालोनी, बुराडी विस्तार, दिल्ली-84

नोट :-जिस किसी सत्संगी भाई के साथ इस प्रकार सतगुरु दया की घटना घटी हो तो प्रमाण सहित दिनोद धाम में भाई बलबीर सिंह को दे सकते हैं।

शेखी छोड़ और सच्चाई कर (कहानी)

एक कमीने को दुंबे की चकत्ती मिल गई। रोज सुबह उसमें से कुछ चरबी लेकर होठों और मूछों पर लगा लेता। अमीरों में जा बैठता और कहता कि आज बहुत तर चीजें खाने में आई। सबूत में अपनी मूंछें ऐंठता, इस मतलब से कि देखों मूछें तक चिकनी हो गई। दर हकीकत पेट में चूहे दौड़ते थे।

एक दिन ऐसा हुआ कि बिल्ली उस चरबी की चकती ले गई। घर वालों ने बिल्ली का बहुत पीछा किया मगर नाकामियाब रहे। लड़का बेचारा डर गया कि अब बाप खपा होगा। दौड़ा-2 अपने बाप को खबर देने को गया। बाप उस वक्त अमीरों की महफिल में बैठा शेखी बघार रहा था। लड़के ने सब के सामने कहा कि वह चरबी का टुकड़ा जिससे आप रोज अपनी मूछों को चिकनी किया करते थे, बिल्ली ले गई। हमने हरचन्द कोशिश की मगर बिल्ली से न छीन सके। यह जो सुना तो वह शख्स बहुत शरमिन्दा हुआ। फिर जुबान न खोली। महफिल में जो लोग बैठे थे, उनको बड़ा ताज्जुब हुआ। कुछ को हंसी भी आ गई। मगर अमीर उसके हाल पर तरस खाकर उसकी दावतें करके उसका पेट भरने लगे। मेहरबान अमीरों की इस मेहरबानी के बर्ताव को देखा तो अभिमान और घमण्ड छोड़कर सच्चाई का गुलाम हो गया। इसलिये तू भी सच्चाई इख्तियार कर ताकि दोनों लोक सुधरें। ■

(कहानी) ज्ञान पुंज

''ब्रह्मचर्य'' का अर्थ है, ब्रह्म में अथवा ब्रह्म के मार्ग में संचरण करना। ऐसे साधन ही ब्रह्मचारी के व्रत कहलाते हैं, सब प्रकार से वीर्य की रक्षा करना ही इन्हीं के अर्न्तगत है। साधारणतया तो अवस्था भेद के अनुसार सभी साधकों को यथाशक्ति उनका अवश्य पालन करना चाहिये। उपर्युक्त वाक्यों में जिस परब्रह्म परमात्मा का निर्देश किया गया है, वह ब्रह्म कौन है और अन्तकाल में किस प्रकार साधन करने वाला मनुष्य उसको प्राप्त होता है।

श्रोत्रादि पांच ज्ञानेन्द्रिय और बाणी आदि पांच कर्मेन्द्रिय इन दसों इन्द्रियों के द्वारा विषयों का ग्रहण होता है, इसलिये इनको द्वार कहते हैं। इन इन्द्रियों को बाह्य विषयों से हटाकर अर्थात् देखने सुनने आदि की समस्त क्रियाओं को बन्द करके साथ ही इन्द्रियों के गोलकों को भी रोककर इन्द्रियों की वृत्ति को अन्तमुर्ख कर लेना ही सब द्वारों का संयम करना है। इसी को योग शास्त्र में ''प्रत्याहार'' कहते हैं।

नाभि और कण्ठ-इन दोनों स्थानों के बीच का स्थान, जिसे हृदयकमल भी कहते हैं और जो मन तथा प्राणों का निवास स्थान माना गया है और इधर-उधर भटकने वाले मनकों संकल्प-विकल्पों से रहित करके हृदय में स्थित करना है।

निर्गुण-निराकार ब्रह्मकों अभेदभाव से प्राप्त हो जाना, परम गति को प्राप्त होना है। इसी को सदा के लिये आवागमन से मुक्त होना, मुक्तिलाभ कर लेना, मोक्ष को प्राप्त होना अथवा निर्वाण ब्रह्म को प्राप्त होना कहते हैं।

जिस का चित्त अन्य किसी भी वस्तु में न लगकर निरन्तर अनन्य प्रेम के साथ केवल परम प्रेमी परमेश्वर में ही लगा रहता हो, उसे 'अन्यचेता:' कहते हैं। ■

परमसन्त हुजूर ताराचन्द जी महाराज के जन्म दिवस पर विशेष

(आसौज अमावस्या ई. 1925) भण्डारा 2.10.2005

''दुख हमारा मित्र है क्योंकि यह हमारे पास बिना बुलाए ही आ जाता है और फिर यह हमारे पास आकर हमें परमात्मा की याद दिलाता है। इसके विपरीत सुख हमारा सब से बड़ा शत्रु है क्योंकि यह हमारे बार-2 कोशिश करने पर भी हमारे पास नहीं आता है और यदि यह हमारे पास आ भी जाता है तो यह हमें परमात्मा की याद को भुला देता है।'' उक्त विचार बाल ब्रह्मचारी परमसन्त हुजूर ताराचन्द जी महाराज के हैं। हुजूर महाराज जी का जन्म आसौज की अमावस्या को ई. 1925 में चौ. मूलाराम जी महलान के घर दिनोद (भिवानी) गांव में माता श्रीमती चावली देवी की कौंख से हुआ। हुजूर महाराज जी के जन्म के चार-पांच दिन के बाद ही मां-पूत बिछौहा हो गया अत: उनका एकमात्र सहारा उनकी बुढ़िया दादी का रह गया। जब हुजूर पांच वर्ष के हुए तो हुजूर की दादी भी परलोक सिधार गई और उनका यह सहारा भी उठ गया। अब उनके घर में उनके पिता जी ही रह गए। हुजूर के पिता जी की घरेलू कार्यों में कोई विशेष रुचि नहीं थी और न ही उनके पास जमीन या नौकरी आदि का ही कोई काम था। अत: घर में अवर्णनीय गरीबी का साम्राज्य था। इसलिए छोटे बच्चे का और उनके पिता जी का जीवनयापन बहुत ही दूभर और दुश्वार था। बोलना चलना सीखते ही पिता जी ने इस छोटे बच्चे को पशु चराने के लिए खेतों में भेजना शुरू कर दिया। इससे जो कुछ आय

होती थी इससे आटे नमक मिर्च आदि का प्रबन्ध हो जाता था और पास पड़ोस से लस्सी लाकर बाप-बेटा उसके साथ रोटियां खाकर गुजर बसर कर लेते थे।

एक दिन हुजूर रोटियां बनाकर पड़ोस से लस्सी लाने के लिए गए तो पड़ोसिन ने हुजूर के पास खड़ी एक सफाई करने वाली जमादारनी को तो लस्सी डाल दी, लेकिन झिड़की देकर उल्टी सीधी बातें सुनाकर हुजूर को खाली हाथ वापिस भगा दिया। हुजूर महाराज जी के हृदय को इससे भारी आघात पहुंचा जिसे वे आजीवन भुला नहीं सके। हुजूर महाराज जी के इस प्रकार के अनादर व तिरस्कार झेलना रोजमर्रा की घटनायें बन गईं। वे कहते थे कि मेरा संसार में कोई भी नहीं था। ऐसी मुसीबत के समय में वे परमात्मा का सहारा ढूंढ़ने का प्रयत्न करने लगे और जब भी समय मिलता वे साधु सन्तों से मिलने डेरों-मन्दिरों में जाने लगे। परन्तु इसके लिए उन्हें थोड़ा बहुत ही समय मिलता था क्योंकि पहले उन्हें अपने और अपने पिता जी के लिए खाने पीने का प्रबन्ध करना पड़ता था।

हुजूर की किशोर अवस्था ही थी कि एक दिन किसी अपराध के लिए पुलिस हुजूर के पिता जी को पकड़ने आ गई। अब उनके पिता जी तो उनको नहीं मिले। वे हुजूर को ही उनके स्थान पर पकड़ कर ले गए। पुलिस के साथ गांव के भी 10-15 आदमी थे। सभी अपने-2 ऊंटों पर चढ़े हुए जा रहे थे। हुजूर महाराज जी अकेले पैदल जा रहे थे। गांव के किसी आदमी में यह कहने का साहस करना तो दूर की बात थी कि उनके पिता जी के किसी अपराध के लिए इस निर्दोष बालक को क्यों पकड़ रहे हो, उनमें से किसी ने उनको अपने ऊंट पर बैठने के लिए भी नहीं कहा। पहले पुलिस उनको लेकर सिवानी थाने में पहुंची और

फिर वहां से उनको हिसार जाने का आदेश मिल गया। हुजूर ने किसी एक ऊंट की पूंछ पकड़ रखी थी। इस यात्रा ने हुजूर के शरीर को तोड़ दिया परन्तु उनका दिल दृढ़ हो गया। उन्होंने इस संकट के समय में राम-राम का जाप टूटने नहीं दिया। वे ज्यों ही हिसार पुलिस कार्यालय में पहुंचे तो पुलिस अधिकारी ने हुजूर को पकड़ कर ले जाने वाले अधिकारी को डांटते हुए पूछा कि जब तुम दोषी को नहीं पकड़ सके, तो तुम इस निर्दोष बच्चे को यहां पकड़ कर क्यों लाए हो? इसे छोड़ दो। इसको आगे से कोई कुछ भी नहीं कहेगा। अब हुजूर महाराज को निश्चय हो गया कि राम का सहारा मिलने पर और किसी के सहारा लेने की कोई भी जरूरत ही नहीं रहती। राम का सहारा ही सच्चा सहारा है।

ज्यों-2 हुजूर महाराज जी बड़े हुए उनके लिए पिता-पुत्र का गुजारा चलाने, रोटी या पानी का प्रबन्ध करने में कोई समय नहीं लगता था। उनको अब बहुत समय साधु सन्तों से मिलने और मन्दिरों धामों आदि के लिए मिल जाता था। अब हुजूर महाराज जी के पिता जी तो यही चाहते थे कि उसे अब अपना घर सम्भालना चाहिए और अपने और उनके लिए अधिक सुख सुविधाओं का जीवन बिताने के लिए कार्य करना चाहिए। परन्तु हुजूर महाराज जी अपने मार्ग पर काफी आगे बढ़ चुके थे। वे उनके रोके नहीं रुके तो वे हुजूर की पिटाई भी करने लग गए। हुजूर महाराज जी पीटने पर भी नहीं रुके तो हुजूर के पिता जी ने उनको दूसरे ढंग से बान्धने का प्रयत्न किया। वे किसी लड़की को घर लिवा कर लाये और उस से उनकी शादी करने का फैसला कर लिया। जब हुजूर को पता चला तो वे अपने किसी मिलने वाले को ले आए। और उस की मदद से उन्होंने

अपने पिता जी से साफ कह दिया कि मैं शादी नहीं करवाऊंगा। यदि घर खुला रखना है तो आप इससे विवाह कर लो, मैं माता समझकर इनकी भी सेवा करूंगा। ऐसा जवाब मिलने पर उनके पिता जी को यह निश्चय हो गया कि हुजूर की परमात्मा की चाह सच्ची और पक्की है। इसलिए उनकी घरेलू मामलों में रही सही रुचि भी समाप्त प्राय: हो गई और वे घर से बाहर ही अपना जीवन बिताने लगे।

अब हुजूर महाराज जी को अपने कार्य के लिए पूरी आजादी मिल गई। वे दूर-2 सन्त महात्माओं के पास जाने लग गए। इन्होंने हर पन्थ और मत को नजदीक से देखा। तीर्थ-व्रत, दान-पुण्य, जप-तप सभी कुछ किया परन्तु शान्ति नहीं मिली। अन्तत: उनको किसी से राधास्वामी पन्थ के बारे में पता लगा। वे आगरा, व्यास, सिरसा आदि स्थानों पर गए। कई स्थानों पर उनको नाम लेने के लिए भी कहा गया। परन्तु सिरसा में मस्ताना जी ने उनको बताया कि वे अरमान साहब के हंस हैं और उनसे ही उनको नाम मिलेगा। तब वे जूई आए। कई चक्कर लगाने पर उन्होंने उनको नाम की दीक्षा दी और करणी का मार्ग बताया जिससे उनको पूर्ण शान्ति प्राप्त हुई। कुछ वर्षो में ही आपने उच्चतम अवस्था प्राप्त की तब अरमान साहब ने उनको नाम की बख्शीश करने के आदेश दे दिए। उन्होंने अब सत्संग दिनोद (भिवानी) की नींव रखी। वे कहते थे कि-

ताराचन्द गरीब था, मांगी मिली न मांगी छाय।
दया हुई गुरुदेव की, सब चरणामृत ले ले जाय।।

हुजूर महाराज जी की शिक्षाएं बहुत ही सीधी सादी थी। वे कहते थे कि संसार में जीव के लिए दो ही मार्ग हैं। एक मनमुखता का और दूसरा गुरुमुखता का। जो लोग बिना गुरु के

दानपुण्य, जप-तप, पूजा-पाठ, होमयज्ञ, करते हैं वे सभी मनमुखी हैं यद्यपि ये सब अच्छे कार्य हैं। उन लोगों को अपने अच्छे कार्य करने का फल तो अवश्य मिल जाएगा। परन्तु उनको नीची योनि, पशु पक्षी अथवा कुत्ते-बिल्लियों की योनियों में भी जाना पड़ सकता है। जैसे कुछ कुत्ते-बिल्ली भी गद्दों पर सोते हैं और बढ़िया खाते-पीते हैं। उनका पुण्य किया हुआ होता है। परन्तु इस कलियुग के समय में सन्त सतगुरु से नाम लेकर जो उनकी आज्ञा में बरतेगा वह बिना विशेष कष्ट के ही अपना जगत और अगत बनाते हुए अन्तत: मोक्ष को प्राप्त कर लेगा। मनमुख मनुष्य तो माता-पिता, स्त्री-पुत्र आदि के लिए भी अपना कर्तव्य पूरा नहीं कर सकता है। अत: उसको सुख नहीं मिल सकता है। इसीलिए ही ऐसे लोगों के बारे में महाराज जी ने कहा है-

घर का शंकर मरे पियासा, बाहर करे जलधारा।
ऐसा पुत्र नर्क का बासी, महादुष्ट हत्यारा।।

अत: हर मनुष्य जो अपनी भलाई चाहता है उसको पूर्ण सन्त सतगुरु की तलाश कर उससे नाम की दीक्षा लेकर उनके वचनों के अनुसार कार्य कर अपना मन काबू करके पूर्ण शान्ति प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिए।

जिसको सतगुरु मिलिया, उसका लेखा निमड़िया।

हुजूर महाराज जी ने सत्संग और नाम की दीक्षा देने का अधिकार देकर अपने प्रिय गुरुमुख परम सन्त कंवर जी महाराज को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त कर दिया और 3 जनवरी, 1997 को वे ज्योति जोत समा गए।

■